DIVYA HIMACHAL, SEPTEMBER 2, 2020

After 10 Years of Dedicated Efforts, Atal Tunnel Ready

Contact : 9816074025 JAI BHARAT STEEL
Toll Free No.: 1800 1370099

divyahimachal.com

धर्मशाला, बुधवार, 2 सितंबर, 2020

रंग लाई दस साल की मेहनत, अटल टनल तैयार

एफकॉन कंपनी ने कर दिखाया कारनामा; 2500 करोड़ की लागत से हुआ निर्माण, मिलेगी सुविधा

निजी संवाददाता—पंडोह

गुड न्यूज

समुद्र तल से तीन हजार मीटर की ऊंचाई पर 9.2 किमी लंबी सुरंग का निर्माण करना किसी चुनौती से कम नहीं था। और वह भी ऐसी स्थिति में, जब एक छोर पर काम लगातार जारी था और दूसरे छोर पर सिर्फ छह महीने ही काम हो रहा था। इस ऐतिहासिक टनल का निर्माण करने वाली कंपनी एफकॉन के प्रोजेक्ट मैनेजर सुनील त्यागी ने खुशी जाहिर करते हुए बताया कि हौसले बुलंद थे और एक इतिहास रचना था, जिसे एफकॉन ने रच डाला। यह विश्व की सबसे लंबी ट्रैफिक टनल है। शाहपुरजी पलोनजी ग्रुप की कंपनी एफकॉन और ऑस्ट्रिया की कंपनी स्टारबैग ने संयुक्त रूप से इस टनल के कार्य को पूरा किया है। उन्होंने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कबायली जिला लाहुल स्पीति के लिए जो सपना देखा था, उस सपने को साकार करने में 10 वर्षों तक दिन रात कड़ी मेहनत की गई। 2500 करोड़ की लागत से अटल टनल न सिर्फ कबायली जिला लाहुल स्पीति के लिए वरदान बनेगी, बल्कि सामरिक दृष्टि से भी सेना के लिए अति महत्त्वपूर्ण साबित होगी। एफकॉन के प्रोजेक्ट मैनेजर सुनील त्यागी ने खुशी जाहिर करते हुए बताया कि जो कार्य उन्हें बीआरओ द्वारा सौंपा गया था, आज उसे उन्होंने हजारों लोगों की मेहनत के साथ पूरा

करके दिखाया है। सुनीत त्यागी बताते हैं कि टनल की खुदाई के वक्त एक नहीं, बल्कि अनेक चुनौतियों से उनका सामना हुआ। विकल्प कम थे और उन्हीं के सहारे कार्य पूरा करना था। दोनों छोरों से टनल की खुदाई का कार्य शुरू करना पड़ा। मनाली की तरफ से काम 12 महीने जारी रहता, लेकिन लाहुल की तरफ से सिर्फ छह महीने ही काम करने के लिए मिल पाते थे। कभी भारी मात्रा में पानी के रिसाव से सामना हुआ तो कभी भुरभुरे किस्म के पत्थरों से। शुरुआती दौर में तो 0.41 किमी की खुदाई करने में ही चार साल लग गए। इस पूरे कार्य में एक हजार से अधिक कर्मचारी और 150 इंजीनियरों ने काम किया। सुनील त्यागी ने परियोजना प्रबंधन और टनल निर्माण के हर पहलू में उनका सहयोग करने वाले बीआरओ, स्टारबैग कंपनी और सभी कर्मियों का आभार जताया है, जिन्होंने राष्ट्र निर्माण के इस महत्त्वपूर्ण प्रोजेक्ट में अपना अमूल्य योगदान दिया।